समकालीन कहानी का विकास : स्त्री-पुरूष सम्बन्ध

समकालीन कहानी विगत पाँच दशकों से चर्चा के केन्द्र में है। जिसका प्रारम्भ स्वातंत्र्योत्तर दौर में उपजे मोहभंग, अनास्था, संघर्ष और बेरोजगारी के परिवेश से माना जाता है। समकालीन और समकालीनता से तात्पर्य अपने युगीन परिवेश से जुड़ाव और युगबोध से सम्पृक्त होना है।

समकालीन कहानी के पूर्व दौर नयी कहानी में भी ऐतिहासिक बोध तात्कालिक बोध और समसामयिक राजनैतिक, सांस्कृतिक बोध सक्रिय रहे हैं। जिनका घनीभूत विकास सातवें दशक के घटनाक्रम से सम्भव हो पाया है। संयुक्त परिवार के बजाय एकल परिवारों के निर्माण महानगरीय जीवन की आपाधापी, शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में परिवर्तन तथा औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति ने स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में अभूतपूर्व परिवर्तन रचा है।

स्त्री घर-गृहस्थी की वैभवपूर्ण उपादान ही नहीं है और न ही केवल उपभोक्ता समाज की पण्यवस्तु। वह भी सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक और संरचना में विश्व के अर्ध्दभाग का प्रतिनिधित्व रचती है । भारत वर्ष के पुरूष प्रधान समाज में स्त्री की अस्मिता, वरेण्यता और श्रेष्ठता सहभाग को पुरूषप्रधान समाज की दृष्टि से समुचित रूप में स्वीकारा नही गया है। स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के पक्ष और विपक्ष में काफी कुछ लिखा गया है। जिसका लेखा-जोखा करना वह भी कहानी संरचना के अन्तर्गत हमारे शोधकार्य का ध्येय है।

यह सच है कि एक ही कालखण्ड, समय और युगबोध में विभिन्न प्रवृत्तियों,विचारों और दार्शनिक भावबोध के रचनाकार सक्रिय रहते हैं । कोई रचनाकार आंतरिक मनोवृत्तियों का सजग चितेरा होता है तो कोई कथाकार बाह्य परिवेश और युगबोध को विशेष महत्व देता है। निर्मल वर्मा ,राजेन्द्र यादव, मैत्रेयी पुष्पा और नासिरा शर्मा जहाँ आन्तरिक अनुभूतियों के रचनाकार है तो उसी दौर के नयी और समकालीन कहानी के भीष्म साहनी, मोहन राकेश, कमलेश्वर, चित्रा मुद्गल और दीप्ति खण्डेलवाल आदि रचनाकार मध्यवर्गीय स्त्री-पुरूष सम्बन्धो के बाह्य अनुभूतियों एवं रूपों को रेखांकित करते है।

1. समकालीन कहानी : स्वरूप क्षेत्र एवं युगीन संदर्भ

समकालीन कहानी के विकास में विभिन्न कहानी आन्दोलनों, प्रवृत्तियों, विचारधाराओं और रूझानों की चर्चा आवश्यक है। कारण युगीन परिवेश और सामाजिक, राजनीतिक घटनाक्रम में परिवर्तन के अनुरूप स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में लोमहर्षक और युगान्तरकारी परिवर्तन आये है। [1] अतः विभिन्न कहानी आन्दोलनों के अन्तर्गत उनकी चर्चा और विश्लेषण एक दुःसाहस भरा कार्य माना जायेगा।

समकालीन कहानी के व्यापक क्षेत्र में नयी कहानी आन्दोलन के अधिकांश रचनाकार सक्रिय रहे है। अतः समकालीन कहानी के स्वरूप और क्षेत्र के अन्तर्गत पूर्व पीठिका के रूप में नयी कहानी आन्दोलन और योगदान की चर्चा अवश्यम्भावी है। समकालीन कहानी की परिभाषा में एक और कहानी संरचना और शिल्प विधान का जुड़ाव समसामयिकता तात्कालिकता और युगबोध से रहता है, तो दूसरी ओर ग्रामीण बोध, आंचलिक बोध, के समानान्तर महानगरीय जन जीवन की विषमता और त्रासदी से भी दो चार होना है। कस्बाई मानसिकता से उभरकर वैश्विक माहौल में अपनी अस्मिता पहचानना भी है।

1.1 समकालीन कहानी : परिभाषा एवं स्वरूप

समकालीन शब्द एक कालवाचक संज्ञा है , प्रत्यय है। विश्वम्भर नाथ उपाध्यय के विचारानुसार -" 'समकालीन' शब्द यह बताता है कि काल के इस प्रचलित खंड़ या प्रवाह में मनुष्य की स्थिति क्या है, इसे उलटकर कहें तो कह सकते हैं कि मनुष्य की वास्तविक स्थिति को देखकर उसे अंकित या चित्रित करके ही हम समकालीनता की अवधारणा को समझ सकते हैं।"[2] लेकिन हमारे आधुनिक भारतीय साहित्य में 'समकालीनता' पद का प्रचलन नयी कविता और नयी कहानी के बाद के रचना सन्दर्भो को लेकर हुआ है। अतः नरेन्द्र मोहन ने कहा भी है कि-'समकालीन' का अर्थ किसी कालखण्ड़ या दौर में व्याप्त स्थितियों और समस्याओं का चित्रण भर नही है बल्कि उन्हें ऐतिहासिक अर्थ में समझना उनके मूल स्त्रोत तक

पहुँचना और निर्णय ले सकने का विवेक अर्जित करना है। समकालीनता तात्कालिकता नहीं है।" (3)

गंगा प्रसाद विमल 'समकालीनता' को एक काल प्रत्यय मानते हुए भी रचनाकारों की समानधर्मिता को वैचारिक स्तर पर महत्व देते हुए कहते हैं कि "समकालीनता का अर्थ यह नही है कि दो व्यक्ति एक विशेष काल खंड में जी रहे हो और संयोग से वे रचनाशील भी है। जिस समकालीनता की बात की जा रही है उसका शब्दार्थ की धारणा से सम्बन्ध नहीं है, अपितु वह जीवन बोध के आधार पर समानधर्मी रचनाकारों के बोध की समानधर्मिता है।"(4) बकौल वेद प्रकाश अमिताभ के " समकालीनता शब्द वस्तुतः आधुनिकता का लघु रूप है तथा एक विशिष्ट समय से सम्बन्ध है, लेकिन समकालीन कहानी में समय और उम्र का इतना महत्व नही है, जितना समान दृष्टि का हैं । अतः इस की समान जीवन-दृष्टि वाले व्यक्ति है। समकालीन कहानीकार कहे जा सकते हैं जो समान स्तर पर आज के जीवन की विसंगतियों, विकृतियों और संत्रास को झेल रहे हैं ।"(5)

सुरेन्द्र चौधरी के विचारानुसार- "समकालीनता देशकाल से संबध्द है यानी ऐतिहासिक है यानी काल-विशिष्ट है, सामयिक संदर्भ, मानवीय प्रसंग है, राजनीति को भावबोध द्वारा कहानी में रूपांतरित किया जाता है। ऐतिहासिक दबाव भी है, विरोधी पक्ष को देखा समझा है, इसके बिना समकालीनता नहीं हो सकती है। समकालीन साहित्य को हमने अपनी आखों से बनते देखा है, एक बडी परम्परा को देखा है, और उभरती नयी पीढी को जो सृजन और संवेदना का नया उत्साह लेकर आई।"(6)

"समकालीन भावबोध में परिस्थितियों को देखने का एक विशेष कोण होता है, इस संबंध में दूधनाथ सिंह का कथन है -"समकालीनता का अर्थ है परिवर्तनों और परिस्थितियों के सही कोण से देखने का आग्रह।"(7) लेकिन दूधनाथ सिंह के उपर्युक्त विवेचन के बरक्स विश्वम्भरनाथ उपाध्याय का अभिमत समकालीनता की परिभाषा के ज्यादा मान्य होगा कि "समकालीनता एक काल में साथ-साथ जीना नहीं है। समकालीनता अपने काल की समस्याओं और चुनौतियों का मुकाबला करना है । समस्याओं और चुनौतियों में भी केन्द्रीय महत्व रखने वाली समस्याओं की समझ से समकालीनता उत्पन्न होती है।"(8) समकालीनता राज्य सत्ता के विरोध में है, क्योंकि राज्य ही आम आदमी के हितों के विरूध्द खासुलखास के स्वार्थो की पूर्ति में लगा हुआ है और इस प्रक्रिया का संगठित विरोध होने पर राज्य अपनी 'साम्रज्यवादी' परम्परा का उत्तराधिकारी होने के नाते, नृशंस दमन और जनोत्पीड़न का मार्ग अपना रहा है।"(9)

समकालीनता को आधुनिकता का पर्याय माना जा सकता है, बशर्ते आधुनिकता संकीर्ण और कुत्सित भाव को अपने दामन से अलग कर बेदाग

हो जाये। अतः कहा जा सकता है कि आधुनिकता में कुत्सितता या संकीर्णता का कोई भी स्थान नहीं है, क्योंकि ये अवांछनीय है, अमानवीय है। आधुनिकता अपने समय के स्वरूप की पकड़ और पहचान है। आधुनिकता के लिए मात्र विकल्प चुन लेना या निर्णय ही काफी नहीं अपितु उसे हकीकत में बदलने के लिए संघर्ष करना भी आधुनिकता और समकालीनता का ही कार्य होता है।

"साहित्यकार को अपने युगीन परिवेश और स्वरूप से गहरा तादात्मय बोध व संबंध रहता है। परिवेश साहित्य में चित्रित होता है। एवं साहित्य परिवेश में अनेक परिवर्तनों का कारण बनता है।"(10) कहानी का स्वरूप भी परिवर्तित परिवेश का यथार्थपरक अंकन रहता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी कहा है कि "उपन्यास और कहानी के लिए (समसामयिक) यथार्थ प्राण है। उसके न रहने से उपन्यास व कहानी प्राणहीन वस्तु बन जाती है।"(11) परिवेश और युगीन स्वरूप से कटकर कोई भी साहित्यकार सच्चे व समर्थ साहित्य की रचना नहीं कर सकता। किसी भी युग के साहित्य को समझने के लिए उन्हे तत्कालीन परिवेश के सन्दर्भ में रखकर देखना ही उचित है। "साहित्य की किसी विधा के विकास को लेखकों और रचनाओं के नामों से समझा जा सकता है, प्रवृत्तियों से जाना जा सकता है, लेकिन सबसे सही तरीका उस परिवेश और पृष्ठभूमि को पहले समझ लेना है, जो लेखक के मानस-विश्व और लेखन की प्रवृत्तियों को निर्धारित करते है।"(12) कहानी के परिवेश पृष्ठभूमि और क्षेत्र में तात्विक सम्बन्ध रहता है और अंतर भी। प्रसंगवश समकालीन कहानी के क्षेत्र पर भी चर्चा आवश्यक होगी।

1.2 समकालीन कहानी का क्षेत्र

साहित्य जगत के इतिहास को देखें तो कहानी को सामाजिकता से जोड़ने का प्रयास प्रेमचन्द ने किया। घीसू माधव जैसे पात्रों का सृजन कर जीवन की वास्तविकताओं का साक्षात्कार प्रेमचद ने कराया और कहानियों में अभिजात्य वर्ग के बजाय निम्न वर्ग को प्रतिष्ठित किया। कहानी को सामाजिकता से जोड़ कर जो भूमिका तैयार की उसमें सभी कथाकारो ने अपना-अपना योगदान दिया।

आजादी के बाद मात्र सत्ता का हस्तांतरन हुआ। सत्ता विदेशी शोषकों के हाथ से निकल कर देशी पूंजीपतियों पद लोलुप नेताओं के हाथों में आ गई और अपनी स्थिति को बनाये रखने के लिए आजादी के समय किये गये त्यागों को याद दिलाया और जनता को मूर्ख बनाया। ऐसी स्थिति में अवसरवादियों ने पर्याप्त लाभ उठाया और जनता का हक जनता को दिलाने के लिए हर अथक प्रयास किया। प्रेमचन्द ने जिस व्यापक सहानुभूति के साथ गाँवों से लेकर शहारों तक फैली दीन-हीन जनता के जीवन की विसंगतियों और संघर्षों का चित्रण किया, नये कहानीकार इससे विमुख

होकर भ्रष्टाचार में आकंठ निमग्न, महत्वाकांक्षी अवसरवादी एवं सुविधाभोगी मध्यमवर्ग को कहानी का केन्द्र बनाया।

पूर्ववर्ती कथाकारों में जैनेन्द्र और अज्ञेय, अश्क आदि की मनोवैज्ञानिक दार्शनिकता का पुरजोर विरोध करने वाले नई क्रान्तिकारिता का उद्घोष करने वाले नये कहानीकारों ने पाश्चात्य परिवेश और पीड़ा को पात्रों के माध्यम से मुखरित करना आरंभ किया। इनकी कहानियों में भाषायी शब्द जाल,सामाजिकता के स्थान पर आत्मनिबध्द वैयक्तिकता और समवेत राष्ट्रीय दिशा के स्थान पर भयानक निरूद्देश्यता की अभिव्यक्ति हो रही थी। कहानी को गाँव और 'शहर' की सीमाओ में बाँट कर उसकी व्यापक सामाजिकता को तोड़ने का प्रयास किया गया। कला कला के लिए साहित्य को विचारधारा से रहित करने के आग्रह ने सलिलता और सौष्ठव से भाषा को नया संस्कार दिया लेकिन वैचारिक स्तर पर उसे दिवालिया बना दिया।"[13]

पहले अकहानी आयी फिर समकालीन कहानी ,समकालीन कहानी और समसामायिक कहानी में भी फर्क है। समकालीन कहानी का तात्पर्य उस कथा आन्दोलन से है जिसे कथा आन्दोलन के रूप में डॉ.गंगा प्रसाद विमल ने खड़ा किया और एक नया तर्कजाल बुनकर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने की कोशिश की। विमल जी के ही शब्दों में -"समकालीन कहानी रचना की कोई नयी विधा नहीं है, न ही नये लोगों का कोई रचनात्मक आन्दोलन इसे कहा जाना चाहिए, अपितु वे सब रचनाकार जो कम से कम रोमांटिक भाव बोध तथा परम्परागत स्थिति से अलग है और कथा रचना में अपने समग्र नयेपन का आग्रह रखते है-समकालीन रचना के रचनाकार है।"[14]

सुधीजन जानते है कि भारतीय जन जीवन में स्वतंत्रता के पश्चात एक नए अनिश्चित और व्यापक उव्देलनमय समाज का जन्म हुआ है,जो हर दिन अपना रूप स्वरूप बदल रहा है,प्राचीन और बूढी निष्क्रिय सांस्कृतिक परम्पराओं के लिए शिथिल और प्रवंचनामय संस्कार और परिवर्तित मूल्य का युग एक ऐसी पृष्ठभूमि है जिसमें व्यक्तिमन एक विघटन ,विश्रृंखलता और टूटन महसूस करता है। हर सम्बन्ध टूटता-सा, संकटग्रस्त है या वह नए परिवेश के अनुकूल नवीनीकरण की प्रक्रिया-पीडा झेल रहा है। व्यक्ति के अस्तित्व-बोध को स्वरूप और उसकी संवेदना की प्रकृति भी बदल गई है। शायद अन्तर्विरोध और जटिलता ही आज के युग की वास्तविकताएँ है। युग-जीवन की इसी जटिलता और अन्तर्विरोधसे व्यक्तिमन की जटिलता और अन्तर्विरोध उपजे हैं और हमारे वैयक्तिक और सामाजिक सम्बन्धो में एक अन्तर्विरोधी, गुत्थिमय अन्तर्व्दव्द समा गया है।"[15] जिसकी अभिव्यक्ति विभिन्न कहानियों में पाते है।

समकालीन कहानी जहाँ मानवीय जीवन की आपाधापी संघर्ष चेतना और परिवर्तित मूल्यबोध एवं स्त्री-पुरूष के नये मानमूल्यों से जुडी है वह निसन्देह पुरानी कहानियों से अलग है। वैसे भी आधुनिक कहानी पुरानी

कहानी की तुलना में छोटी और संक्षिप्त होती है। पुरानी कहानी में अलौकिक और अति प्राकृत तत्वों की प्रधानता होती थी,आधुनिक कहानी लौकिक और जीवन के यथार्थ को महत्व देती है। पुरानी कहानी चमत्कार और अविश्वसनीयता पर भरोसा करती थी, आधुनिक कहानी ने स्वाभाविकता और विश्वसनीयता का मार्ग अपनाया। पुरानी कहानी में कौतूहल,जिज्ञासा और उत्सुकता बनाए रखने के लिए अप्रासंगिक करतब भी हुआ करते थे; आधुनिक कहानी ने सहजता, प्रामाणिकता और जीवन्तता को महत्व दिया। पुरानी कहानी अक्सर ही तर्किकता के बन्धन से मुक्त होती थी; आधुनिक कहानी का न केवल अपना एक रचनात्मक तर्क होता है बल्कि वह बौध्दिक तार्किकता को भी सन्तुष्ट करती है। [16] पुरानी कहानी में संयोग और आकिस्मकताओं की प्रधानता होती थी; आधुनिक कहानी जीवन के कार्यकारण' नियम को सन्तुष्ट करती है। पुरानी कहानी किसी पुराण , धर्म ग्रन्थ, प्रबन्धकाव्य आदि के आनुषंग रूप में नीति और बोध का माध्यम होती थी या फिर किस्सागोई और गप्प की तरह शुध्द मनोरंजन का साधन होती थी; आधुनिक कहानी की पहचान उसकी स्वतंत्र कलात्मकता है और आज वह साहित्य की एक गंभीर विधा के रूप में प्रतिष्ठित है।

"समकालीन कहानी जीवन की कौंध है, प्रतीति है एक विचार बोध है, परिवर्तित जीवन की साक्षी है,मानवीय सम्बन्धों में आये हुए बदलाव की सूचक है, पुरूष के मुकाबले में स्त्री जीवन की अस्मिता है।"[17] वैसे भी समकालीन कहानी में प्रत्येक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना,हलचल और क्रिया कलाप का अवश्यं भावी प्रभाव पडा है। कहानीकार जिस जीवन -परिवेश में रहता है, वह प्रत्येक दृष्टि से राजनीति से प्रभावित है। आधुनिक कहानी की मूलभूत विशेषता है यथार्थ के प्रति प्रतिश्रुति या प्रतिबध्दता।"[18]

समकालीन कहानी के क्षेत्र में कोई भी मानवीय अनुभूति अवांछित नहीं है। यह सडक, चौराहे, पब, रेस्टोरेन्ट, रेलवे स्टेशन, बस स्टैण्ड, स्कूल, कॉलेज, कार्यालय से लेकर बेडरूम की रतिक्रियाओं और विवशताबोध, हताशा, निराशा और संघर्ष भाव से भी अनुस्यूत है। कोई भी भाव प्रतीति बोध इससे अछूता नहीं है। यह शिल्प के स्तर भी नयी भाव भंगिमाओं और तलख अभिव्यक्ति की कायल है।

मोहन राकेश के शब्दों में "आज कुछ लोग नई कहानी या समकालीन कहानी का सम्बन्ध एक विशेष तरह के शिल्प या वस्तु के साथ जोडकर उसका मूल्यांकन करना चाहते है... हमारी रचना का क्षेत्र निःसीम है और रचना की वास्तविक सिध्दि उसके प्रभाव की व्यापकता में है। इसके लिए इतना ही आवश्यक है कि लेखक का दृष्टिकोण स्पष्ट हो और उसकी रचना उसके और पाठक के बीच एक घनिष्ठता की स्थापना कर सके। इसके लिए अभिव्यक्ति में जिस स्वाभाविकता की आवश्यकता है,वह जीवन की सहज अनुभूतियों से जन्म लेती है और वह स्वतः ही रचना को सहज संवेध बना देती है। ये अनुभूतियाँ हमें जीवन के हर पक्ष और हर पहलू से प्राप्त ही सकती है।" [19]

1.3 समकालीन कहानी : युगीन संदर्भ

समकालीन कहानी के विस्तृत परिप्रेक्ष में युगीन संदर्भ अपने विभिन्न कोणो ,रूपो कों और अभिप्रायों में झिलमिलाते हैं। मानवीय जीवन में व्याप्त विषमताओं और विसंगतियों के प्रति पीडा और आक्रोश का भाव परिलक्षित होता है।

समाज में व्यक्ति जन्म लेता है और वह खान-पान तथा निवास करता है। इसी प्रकार साहित्यकार भी समाज का एक सचेतन प्राणी समाज के अन्य व्यक्तियों के समान ही होता है। परिवेश और साहित्य रचना के संबंध-सूत्रों में कई जोड और मोड़ आना स्वाभाविक रहता है। मार्क्स ने इस संबंध में अपना मत प्रतिपादित करते हुए कहा है कि कला अथवा साहित्य मानव महत्ता की प्रतिष्ठा मौलिक उपकरणों द्वारा ही कर सकते है। मानवत्व मात्र चेतना नहीं, जीवंत मानव का समानार्थक है। रचनाकार अपने सामाजिक परिवेश से अत्यंत सचेतन रूप से संपृक्त रहकर पूरी सच्चाई के साथ अपने रचनात्मक दायित्व को निभाता रहता है। डॉ.नगेन्द्र के शब्दों में " समाज साहित्यकार का सामाजिक व्यक्तित्व-सर्जक, व्यक्तित्व-अभिव्यक्ति, प्रक्रिया-साहित्य। युगीन परिवेश प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सर्जक चेतना को तो प्रभावित करता ही है,साथ ही पाठक को भी प्रभावित करता है।[20] परिवेश के प्रति जागरूकता ने व्यक्ति को समाज से बडी गहराई से संपृक्त किया है। इसी कारण से सामाजिक चेतना मुखरित हुई है। चूँकि व्यक्ति जानता है कि समाज के बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं है। रचनाकार समाज के प्रति प्रतिबध्दित होता है। साहित्यिक आन्दोलनों का लक्ष्य भी सामाजिक सरोकार ही है। सामाजिक समस्याओं से जूझने में व्यस्त है। "आज का भयावह यथार्थ मानस को मथता है जिसके कारण जीवन विषम से विषमतर होता जा रहा है।"[21]

आज हमारे समाज में विषमताएँ और विसंगतियाँ हैं। सड़ी गली और रूढ़िवादी सामाजिक व्यवस्था को हटाने के प्रति एक गहरा आक्रोश है। समाज ये जो रूढ़ियाँ थी उसे बदलने के लिए समकालीन रचनाकारों ने अथक प्रयास किया है। मार्क्स ने अपने विचार व्यक्त किया "भौतिक जीवन की उत्पादन-विधि, राजनीतिक एवं बौध्दिक तथा सामाजिक जीवन की प्रक्रिया को साधारण तथा निश्चित कर देती है। मनुष्य-चेतना उसके अस्तित्व को निर्धारित नहीं करती है, अपितु सामाजिक व्यवस्था मानव-चेतना को संचालित करती है। अपने विकास की विशिष्ट प्रक्रिया में समाज की उत्पादन-शक्तियों का टकराव उत्पादन के साधनों से होता है। तभी सामाजिक क्रांति का श्रीगणेश हो जाता है। आर्थिक संरचना में परिवर्तन के साथ समाज की समस्त आधारभूत संरचना में परिवर्तन हो जाता है।" [22] समाज में यातना आज भी है, उसका स्वरूप बदला है। "अब किसी होरी - धनिया को साहूकारी सामंतवाद का शिकार नहीं होना पड़ता, अब तो अपने

हाथों से निर्वाचित सरकार का तंत्र उसे पीस-पीसकर अधमरा कर देता है। स्वाधीन भारत का आदमी अपनी ही भाई-बिरादरी से डरा,सहमा रहने लगा।"(23)

आज समाज में पारिवारिक विघटन होते जा रहे हैं। शोषण से निम्न ,मध्यवर्ग दुखी है, सुनने वालों के कान शायद नहीं है। समकालीन कहानी में इनका चित्रण हुआ है । पं.विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' की 'सफर' पारिवारिक संबंधो के बदलाव को समर्पित करती है। आजकल की शिक्षित पुत्रवधुएँ वृध्द सास-ससुर का अनवश्यक भार उठाने की जहमत नही लेना चाहती अपना स्वतंत्र उन्मुक्त और इच्छित जीवन जीना चाहती है यदि पति नेही मानता और अपने माता-पिता को कुछ समय के लिए भी साथ रखना चाहता है , तो पत्नी बच्चों को लेकर मायके जाने की धमकी देती है, और पुत्र चुप हो जाता है, वह अपनी गृहस्थी की सुख-शांति समाप्त नहीं करना चाहता। स्त्री पुरूष या पति-पत्नी संबंधो का पारम्परिक रूप 'एक छत के नीचे' आज विपरीत है। सी.भास्कर राव ने ऐसे दम्पति की कथा रोचक ढंग से कही है, जो एक छत के नीचे रहते हैं, परन्तु उनमे पति-पत्नी जैसा लगाव न होकर अलगाव है। वे छत के नीचे केवल रहते है परन्तु अपने विगत में खोये रहते हैं, जबकि पत्नी एक नारी रूप में किसी पुरूष से प्रेम करती थी, और उससे विवाह न हो सका। उसी प्रकार पति पुरूष रूप में एक स्त्री से प्रेम करता था और विवाह उससे नहीं हो सका। समाज व्यवस्था के अनुसार पति-पत्नी के रूप में उन्हें एक छत मिली है, जिसके नीचे उन्हें रहना पडता है: " रेल की दो पटरियों की तरह वर्षो से वे अपने-अपने सुख-दुख को लेकर समान्तर साथ-साथ जीते रहे। फिर भी एक दूसरे से अनजुड़े, असंबध्द,साथ होते हुए भी अलग ।"(हंस 1979)

पति-पत्नी के संबंध दिखावे के भी हो सकते है। एक छत के नीचे रहते हुए भी उनके मन विगत के संबंधों से जुड़े रहते हैं, उनके लिए विवाह और प्रेम में एक गहरा अंतर है। स्त्री-पुरूष सोचने लगे है कि प्रेम और वासना में कोई अंतर कैसे हो सकता है ? दोनों एक दूसरे के सहारे ही चल सकते हैं । प्रेम करने में स्वतंत्रता है। एक के बाद दूसरा प्रेम क्यों नही किया जा सकता है ? प्रेम कोई पाप नही है। समकालीन कहानी में इस तरह के भाव पूर्ण रूप से व्याप्त हैं।

अर्नेस्ट फिशर के शब्दों में : "राजनीति नैतिकता का ही व्यापक रूप है।" लेकिन समकालीन सन्दर्भ में नैतिकता का कोई विशेष योगदान या महत्व राजनीति में लक्षित नहीं होता है, 'राजनीति' को परिभाषित करते हुए ईस्टन का मत है : " वे समस्त प्रकार की गतिविधियाँ राजनीति कही जा सकती है, जो सामाजिक नीति के निर्माण और क्रियान्वयन से जुड़ी होती है।"(24)

समकालीन परिवेश में राजनीतिक गतिविधियों का जोर-शोर अधिक है। राजनीतिक परिवेश की ये कहानियाँ ही कालान्तर में इतिहास बोध जगाती है। बिना इतिहास को समझे अपने युग को समझा नही जा सकता

है। समकालीन राजनीति को समझने के लिए 60 से पूर्व की राजनीतिक परिस्थितियों को जानना और समझना आवश्यक होगा।

राजनैतिक चिंतन का भी परिवेश पर प्रभाव पड़ता है। जो राजनीति विचारधारा जनहित के उद्देश्य को लेकर चलती है, वह अपना प्रभाव हर एक पर डालती जाती है यदि चिन्तन के साथ उसकी कथनी व करनी होती है तो आम जनता में उनकी साख बनी रहती है। वे सम्मान के पात्र बनते है । देश प्रगति के पथ पर बढ़ता है। आम जन में भी इससे आत्मविश्वास और सजगता उत्पन्न होती है। उसे देश के प्रति अपनी पूरी भागीदारी समझनी चाहिए । अगर इसके विपरित होती है। तो 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत चरितार्थ हो जाती हैं और राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट आ जाती है। ऐसी स्थिति में देश का अहित ही संभव होता हैं । समकालीन कविता के कवियों ने भ्रष्ट शासन के खिलाफ विद्रोह का स्वर बुलन्द किया हैं । समकालीन कवियों ने राजनीतिक विसंगतियों का ऐसा व्यंग्यपरक खाका खींचा होता है ये कवि आक्रोश और तनाव के कवि है।

समकालीन रचना दृष्टि, समता, स्वतंत्रता और मानव गरिमा को लेकर चली हैं। वह शोषण का विरोध करती है। शोषित व्यक्ति के संघर्ष का चित्र प्रस्तुत कर रही है । समकालीन साहित्य एक अराजकता का अनुभव कर रहा है। जिसमे उसे नई संस्कृति-दृष्टि विकसित करनी पड़ी है। जो प्राचीन संस्कृति से भिन्न है। परन्तु अपनी संस्कृति और अस्तित्व को सुरक्षा देना साहित्य का प्रथम दायित्व है। समकालीन कहानी की मूल्य-स्थापना की अपनी दृष्टि है और रचना धर्मिता में सामाजिक प्रतिबध्दता के दायित्व का निर्वाह सफल रूप मे करने से समर्थ है। यथार्थ के विद्रूप को दिखाने का अर्थ सांस्कृतिक विघटन नही होता है।

समकालीन कहानी में स्त्री और पुरूष के संबंध में आधुनिक संस्कृति की छाप दिखाई देती है। समकालीन नारी एक के बाद दूसरे प्रेम को बुरा नही समझती है। दोनों को दो अलग समय में पूरी शिद्दत के साथ जीती है, प्रेम करती है। यह सांस्कृतिक बदलाव है। नई पीढी रूढ संस्कारों से मुक्त रही है। संस्कृति का वही रूप उसे स्वीकार है जो आज उपयुक्त है। आँख मूंद कर संस्कृति के नाम पर वह कुछ भी मानने को तत्पर नहीं है। इसका कारण उसका स्वतंत्र चिंतन है वह अपना जीवन अपने ढंग से जीना चाहता है। अतः संस्कृति को समयानुरूप बदलना कुछ अनुचित नहीं है।

समकालीन दौर में मानव एक ओर आधुनिक सुख-सुविधाओं के बीच जी रहा है और दूसरी उपभोक्ता समाज के बीच पण्य वस्तु की तरह बिक रहा है। स्त्री-पुरूष के जीवन में अब विवाह पूर्ण और विवाहोत्तर यौन संबंधों में अभूतपूर्व बदलाव आ चुका है। विवाहित स्त्री-पुरूष की अपनी ऊब ,तनाव और विवशता को करने के लिए अन्यथा यौन संबंध विकसित कर देते है। जिसका विस्तृत विवेचन इसी शोध कार्य के चतुर्थ अध्याय 'स्त्री-पुरूष संबंध : परिवर्तित समाज और विश्लेषण में किया जायेगा।

सुधीजन जानते है कि वर्तमान दौर के उपभोक्ता व वैज्ञानिक युग में मनुष्य व्यस्तताओं से घिरा रहता है। सुख सुविधाओं के बीच भी वह अकेला है। रूटीन जीवन से ऊबकर कुछ मन बहलाव करना मानव स्वभाव है। घर पर ही टी.वी, रेडिओ, वीडियो के बावजूद वह बाहर भागता है क्योंकि ये सभी मनोरंजन के साधन 'घर' में है तब फिर घर के बाहर शेष रहता है,होटल या क्लब क्लब संस्कृति भी अंग्रेजों की देन है। आज क्लबों के सदस्य बनना सभ्य सुसंस्कृत समाज में रहने के लिए जरूरी है। क्लब में डांस, गाना तथा शराब कबाब के दौर चलते हैं। साथ ही साथी का अभाव भी नही खलता। नये साथी आसानी से मिल जाते है। काम सम्बन्धों में नवीनता की चाहत से पुरूष क्लबों की ओर भागता है। कुंठित व्यक्ति भी यहाँ आकर राहत पाता है। मानसिक चिंता से भी मुक्ति पाता है। शोर ,शराब, नृत्य, डिस्को में गम भूल जाता है। स्त्रियाँ भी क्लबों में आकर आधुनिका कहलवाना पसन्द करतीं हैं। नये-नये पुरूष मित्र उन्हें वहीं मिल जाते हैं। उच्च मध्यवर्ग पैसे बचाने के लिए घर पर ही क्लब की तरह किटी पार्टियों का आयोजन कर लेते हैं तथा वहाँ कैबरे डांस छोड़कर सभी तरह की क्लब वाली सुविधाएँ उपलब्ध होती है। (25)

°कहना न होगा कि समकालीन कहानी अपने विस्तृत परिप्रेक्ष्य में पूरी जीवंतता से अपने परिवेश से जुड़ी हुई है। परिवेश के प्रति अतिशय संवेदनशीलता ने कहानीकार में विशेष आत्मसजगता ला दी है। जिससे इनकी कहानियाँ अपने समय की सच्चाइयों के दस्तावेज के रूप में देखी जा सकती है।

"जीवन स्थितियों के तीव्र बदलाव के कारण जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यों में परिवर्तन आया है। मूल्यों के प्रति बदली हुई दृष्टि पूरी तरह समकालीन कहानी में चित्रित हुई है।"(26) समकालीन कहानी में भी जीवन में पीढ़ियों के अन्तर बात को स्वर मिलता हैं । हमारी सोच और चिन्तन-प्रक्रिया में जीवन में प्रेम विवाह, विवाह, परिवार में माँ-बाप, भाई-बहन, पिता-पुत्री आदि सुदृढ़ सम्बन्धों के प्रति बहुत अंतर आया है।

समकालीन कहानी में मूल्यों के प्रति परिवर्तित दृष्टि का बहुत विस्तार और सूक्ष्मता से चित्रण किया गया है। स्वतन्त्रता के कारण व्यक्ति आत्मकेन्द्रित हुआ जिस कारण संयुक्त परिवार जो पूर्व से चले आ रहे थे। बिखर गये और एकल परिवार ने अपना अस्तित्व बना लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि आत्मीयता का स्थान अर्थ ने ले लिया। आत्मीय रिश्ते अब अर्थाश्रित हो गये ।

समकालीन कहानी के विस्तृत परिप्रेक्ष्य में स्त्री-पुरूष संबंध इतने विविध आयामों में चित्रित हुए है कि आश्चर्य होता है समकालीन कहानी कही अवचेतन का प्रतिबिम्ब बनकर आती है और अपनी अधूरी अतृप्त इच्छाओं का रूपक । धर्मयुग में निर्मल वर्मा ने लिखा था कि " कहानी अंधेरे में एक चीख है।" और कहानीकार एक डिटेक्टिव की तरह है जो अंधेरे की 'झाड़ी' में छिपे 'संदिग्ध' 'यथार्थ' का लगातार पीछा करता रहता

है –केवल पीछा करता है, पाता नहीं" क्योंकि अन्ततोगत्वा कहानी सिर्फ एक कोशिश है...जो महज एक मरीचिका हो सकती है।" लेकिन फिर भी लेखक के लिए लिखना एक 'अभिशाप है, लिख पाना एक अनिवार्य नियति है,जिससे भागा नही जा सकता। इसके साथ ही यह भी जानना आवश्यक है कि निर्मल के लिए अंधेरे का यह 'टोटल-टेरर'भी "सिर्फ संदर्भ है- कहानी का विषय नही", "विषय कुछ भी हो सकता है- ड्राइंग रूम के प्रेम से लेकर अपनी चहारदीवारी में फर्श पर रेंगती हुई धूप को देखने तक।"

सार संक्षेप में कहा जायेगा कि समकालीन कहानी एक किशोर भावुकता की नजरों से स्त्री-पुरूष सम्बन्धों का रंगारंग चलचित्र भी है तो कही भय, आतंक, विवशता, बुभुक्षा में जीते हुए स्त्री-पुरूष सम्बन्धों का वांछित फैण्टेसी लोक भी है। जिसे हम विविध रचनाकारों की कलम से मूर्तिमान होते हुए देख सकते हैं। चाहे वे निर्मल वर्मा, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर हो या मैत्रेयी पुष्पा, नासिरा शर्मा और चित्रा मुदगल दावे आन्तरिक मनोभावों के सटीक चित्रण के है।

प्रथम अध्याय : सन्दर्भ सूची

लेखक	पुस्तक	
1. रोहिताश्व	: शोधकर्त्री की निजी वार्ता, गोवा विश्वविद्यालय दिनांक 21/07/07	
2. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	: समकालीन कहानी की भूमिका	पृ.2
3. नरेन्द्र मोहन	: समकालीन कहानी की पहचान	पृ.7
4. गंगा प्रसाद विमल	: समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि	पृ.166
5. वेद प्रकाश अमिताभ	: हिन्दी कहानी के सौ वर्ष	पृ.50
6. सुरेन्द्र चौधरी	: हिन्दी कहानी : प्रक्रिया और पाठ	पृ.180
7. दूधनाथ सिंह	: समकालीन कहानी : दिशा और दृष्टि	पृ.7
8. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	: समकालीन सिध्दांत और साहित्य	पृ.16
9. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	: समकालीन सिध्दांत और साहित्य	पृ.61
10. डॅनियल बैल सोसायटी	: द कमिंग ऑफ पोस्ट इण्डस्ट्रीयल	पृ.52
11. हजारीप्रसाद व्दिवेदी	: विचार और वितर्क	पृ.95
12. राजेन्द्र यादव	: कहानी : स्वरूप और संवेदना	पृ.52
13. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	: समकालीन सिध्दांत और साहित्य	पृ.77
14. गंगा प्रसाद विमल	: समकालीन कहानी का रचना विधान	पृ.19
15. धनंजय वर्मा	: हिन्दी कहानी का सफरनामा	पृ.21
16. धनंजय वर्मा	: हिन्दी कहानी का रचनाशास्त्र	पृ.109
17. रोहिताश्व	: शोधकर्त्री की निजी वार्ता, गोवा विश्वविद्यालय दिनांक 21 सितम्बर2007	

18. पुष्पपाल सिंह : समकालीन कहानी : सोच और समझ पृ.68

19. मोहन राकेश : आधुनिक हिन्दी कहानी पृ.92

20. नगेन्द्र : साहित्य का समाज शास्त्र पृ.104

21. श्रीपतराय : कहानी,(नववर्षांक) जनवरी 1974 पृ.9

22. कैलाश वाजपेयी : साप्ताहिक हिन्दुस्तान 2 मई 1992 पृ.53

23. मैत्रेयी पुष्पा : साप्ताहिक हिन्दुस्तान 9 मई 1992 पृ.43

24. सुरेन्द्र अरोडा : रूढियाँ,साप्ताहिक हिन्दुस्तान 9 मई 1992 पृ.40

25. उषा कीर्ति राणावत : स्त्री-पुरूषों के सम्बन्धों का विमर्श पृ.164

26. पुष्पपाल सिंह : समकालीन कहानी : सोच और समझ पृ.12